भगवान जगन्नाथ रथयात्रा पर माननीय राज्यपाल का संबोधन

दिनांक 20 जून 2023, मंगलवार	**समय : 2.10 PM**	**स्थान : पलटन बाजार, गुवाहाटी**

इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (ISKCON) के सदस्य,

यहां उपस्थित आदरणीय गणमान्य व्यक्ति,

और मीडिया से हमारे मित्र,

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा की आप सभी को हार्दिक बधाई। इस पावन रथ यात्रा के शुभारंभ के मौके पर आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

ऐसा माना जाता है कि जो भक्त इस रथ यात्रा में शामिल होकर भगवान के रथ को खींचते हैं, उन्हें कई यज्ञों के समान फल मिलता है। ये मेरा सौभाग्य है कि इस रथ यात्रा में भाग लेने का मौका मिला।

रथ यात्रा भगवान विष्णु के अवतार भगवान जगन्नाथ से जुड़ा एक प्रमुख हिंदू त्योहार है। यह पर्व समानता और एकता का प्रतीक है। भगवान जगन्नाथ के साथ उनके बड़े भाई भगवान बलभद्र और उनकी बहन सुभद्रा की रथ यात्रा निकाली जाती है।

जगन्नाथ शब्द दो शब्दों “जग” और “नाथ” से बना है। “जग” का अर्थ है “ब्रह्माण्ड” और “नाथ” का अर्थ है “भगवान”। जगन्नाथ का मतलब ब्रह्माण्ड का भगवान। भगवान जगन्नाथ की स्तुति मात्र से मन में असीम शान्ति का अनुभव होता है।

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा अपने आप में अद्भुत है। यह 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की सच्ची भावना को भी दर्शाती है। देश भर के विभिन्न राज्यों में बड़ी धूमधाम से रथ यात्रा निकाली जाती है। इन रथ यात्राओं में जिस तरह देश भर से हर समाज, हर वर्ग के लोग आते हैं, वह अपने आप में अनुकरणीय है। आस्था के साथ-साथ यह 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना का दर्पण है।

असम में हर साल भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा धूमधाम से निकाली जाती है। यहां भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु इस रथ यात्रा में भाग लेते हैं, जो लोगों की एकता की भावन को दर्शाता है।

भारतीय संस्कृति का प्रभाव विदेशों में भी देखनों को मिलता है। विदेशों में भी भगवान कृष्ण की भक्ति की निर्मल धारा बहती है। कई देशों में हरे रामा-हरे कृ4ष्णा के पावन भजन के साथ भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा धूमधाम निकाली जाती है। हजारों संख्या में विदेशी महिलाएं साड़ी पहनकर और चंदन की बिंदी लगाकर तथा पुरुष धोती-कुर्ता में इसमें भाग लेते हैं।

बंधुओं,

सदियों से हमारी संस्कृति और धर्म लोगों को जोड़ने का काम करती रही है। कसी भी त्यौहार को देख लें, सभी में एकता और सद्भाव की भावना देखने को मिलेगी। धर्म और संस्कृति ने मिलकर हमारी भारतीयता को विकसित किया है।

यह भारतीय धर्म की विशेषता रही है कि वह जटिलताओं में जकड़ा न रहा और सतत चिंतन की अवधारणा को विकसित होने में सहायक सिद्ध हुआ।

निःसंदेह भारतीय संस्कृति के समग्र विकास में भारत के सभी धर्मों ने अपना-अपना योगदान दिया। इस प्रकार भारत की सामाजिक व्यवस्था धार्मिक एवं सांस्कृतिक होते हुए भी वैज्ञानिक विचारों को हमेशा आत्मसात करती रही। विकास की नई संभावनाओं को संबल प्रदान करती रही। धर्म के मार्गदर्शन में ही भारतीय चिंतन व्यवस्था पनपी और कालांतर में विश्व की चिंतन व्यवस्थाओं और मान्यताओं को प्रभावित करती रही।

समय और तकनीक ने संपर्क और संचार के मामले में दूरियों को कम कर दिया है। ऐसे युग में जो गतिशीलता और आगे बढने की सुविधा प्रदान करता है, विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के सामान्य दृष्टिकोण के द्वारा आपसी रिश्तो में मजबूती करना और राष्ट्र-निर्माण महत्वपूर्ण है। आपसी समझ और विश्वास भारत की ताकत की नींव है और भारत के सभी नागरिकों को सांस्कृतिक रूप से एकीकृत महसूस करना चाहिए।

अंत में एक बार फिर मैं लोगों को इस पर्व की हार्दिक बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि भगवान जगन्नाथ सभी देशवासियों को खुशी और समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान करें।

धन्यवाद

जय हिन्द